इकोफेमिनिज्म

भारतीय पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

इकोफेमिनिज्म

भारतीय पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

डॉ. नमो नारायण

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 **(भारत)**
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

इकोफेमिनिज्म
भारतीय पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

आईएसबीएन : 978-81-19098-20-0
सर्वाधिकार : © **डॉ. नमो नारायण**
संस्करण : प्रथम, 2025

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY

समर्पण

उन साहसी स्त्रियों को समर्पित जिन्होंने प्रकृति की रक्षा के लिए अपने जीवन की निस्वार्थ आहुति दी।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्रो. मनुका खन्ना
कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ (उ.प्र.)



आमुख

डॉ. नमो नारायण की यह कृति "इकोफेमिनिज़्म : भारतीय पर्यावरणीय आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका" नारी और प्रकृति के गहरे संबंधों को अकादमिक दृष्टि से समझने–समझाने का एक गंभीर प्रयास है। लेखक ने स्त्री–संवेदना और पर्यावरणीय चेतना को जोड़ते हुए यह स्पष्ट किया है कि भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा में दोनों का रिश्ता केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि जीवनमूल्यों और व्यवहार का हिस्सा रहा है।

यह कृति इस दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट है कि इसमें इकोफेमिनिज्म जैसे जटिल एवं बहुआयामी सिद्धांत को उसके व्यापक वैश्विक परिप्रेक्ष्य सहित गहराई से विश्लेषित किया गया है। लेखक ने उत्तर–आधुनिक समाज में प्रकृति और स्त्री– दोनों के शोषण की प्रक्रिया तथा प्रकृति के प्रति स्त्री की सहज संरक्षणधर्मिता को सूक्ष्मता से उद्घाटित किया है। उन्होंने विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के मिथकीय आख्यानों से लेकर वर्तमान समय की प्रचलित परंपराओं और मान्यताओं तक के उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट किया है कि प्रकृति और स्त्री, दोनों की वर्तमान स्थिति किन ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम है।

इस ग्रंथ की विशेषता यह भी है कि लेखक ने इकोफेमिनिज़्म के विचार को भारतीय संदर्भों की जमीनी वास्तविकताओं से जोड़ा है। भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही प्रकृति–केन्द्रित रही है– यहाँ प्रकृति को ईश्वर का स्वरूप और चेतना का आधार माना गया है। यह चेतना

आज भी भारतीय समाज और संस्कृति में सजीव है, और इसे जीवित रखने का सबसे बड़ा श्रेय स्त्रियों को जाता है। स्त्री स्वयं सर्जक, पोषक और संवेदना की प्रतीक है; इस दृष्टि से वह प्रकृति के अधिक निकट है।

वर्तमान समय में जब पारिस्थितिकीय अवमूल्यन और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव सर्वाधिक रूप से स्त्रियों को प्रभावित कर रहे हैं, तब वही स्त्रियाँ पर्यावरण–संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन की पुनर्स्थापना के प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। यह अध्ययन भारत में पारिस्थितिकीय नारीवाद के विकास, उसके वैचारिक और आंदोलनात्मक आयामों को गहन दृष्टि से समझने का अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, नवदान्य आंदोलन तथा अन्य जनआंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका का लेखक ने जिस संवेदनशीलता और विश्लेषणात्मक दृष्टि से विवेचन किया है, वह न केवल इस कृति की प्रासंगिकता को बढ़ाता है, बल्कि भारतीय पर्यावरणीय विमर्श को एक नई दिशा भी प्रदान करता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति भारतीय पर्यावरणीय चिंतन को एक नई दृष्टि और दिशा प्रदान करेगी। इकोफेमिनिज़्म के माध्यम से प्रस्तुत यह अध्ययन न केवल स्त्री और प्रकृति के अंतर्संबंध को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि किस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक परंपराएँ आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान में वैचारिक आधार बन सकती हैं। यह ग्रंथ आने वाले अध्येताओं और शोधार्थियों को इस क्षेत्र में नए प्रश्नों की खोज, नई दृष्टियों के विकास तथा पर्यावरण और जेंडर विमर्श के गहरे संबंधों पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करेगा।

मैं डॉ. नमो नारायण को इस सारगर्भित, संवेदनशील तथा अत्यंत प्रासंगिक लेखन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। मुझे विश्वास है कि उनका यह प्रयास न केवल अकादमिक जगत में एक महत्त्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा, बल्कि समाज में प्रकृति और स्त्री दोनों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण को भी सशक्त करेगा।

प्रो. मनुका खन्ना
कुलपति
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भूमिका

जब मैंने पारिस्थितिकीय नारीवाद पर अपनी इस शोधपरक पुस्तक के लेखन की शुरुआत की, तब यह केवल एक विचार नहीं था, यह एक संवेदना थी, जो मेरे भीतर गूंज रही थी। इस पुस्तक के लेखन की प्रेरणा का मूल स्रोत मेरी माँ रही हैं। ग्रामीण परिवेश में उनका प्रकृति से जो सहज, आत्मीय और गहरा संबंध था, उसने मुझे बचपन से गहराई तक प्रभावित किया। वास्तव में, गाँवों में माताएँ प्रकृति के साथ एक अद्‌भुत पारस्परिकता में जीती हैं, जैसे वे प्रकृति का अंश हों और प्रकृति उनका। यही सहज और संतुलित संबंध इस पुस्तक की विचारभूमि का आरंभिक बीज बना। प्रकृति के साथ माताओं का जो सहज पारस्परिक संबंध और संवेदनशीलता है, वो अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है। अमृता देवी विश्नोई की खेजड़ी वृक्ष को लेकर जो संवेदनशीलता है, पूरे विश्व में वैसा उदाहरण कहीं और नहीं मिलेगा।

स्त्री और प्रकृति, दोनों के अनुभवों में मैंने एक समान पीड़ा, एक समान संघर्ष देखा। इसी संघर्ष को मुझे समझना था। शोध पर आधारित इस पुस्तक के लेखन के दौरान मैंने महसूस किया कि पारिस्थितिकीय नारीवाद केवल नारी विमर्श का विस्तार नहीं है, बल्कि यह हमारे अस्तित्व के हर उस हिस्से से जुड़ा है, जहाँ प्रकृति और शक्ति (स्त्री) का संवाद होता है। यह विचार हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि स्त्री और प्रकृति दोनों ही सृजन की आधारशिला हैं, और दोनों का अवमूल्यन अंततः मानव सभ्यता के संतुलन को तोड़ देता है।

प्रसिद्ध पारिस्थितिक नारीवादी वंदना शिवा कहती भी हैं कि ''हमारे पास या तो ऐसा भविष्य होगा जहां महिलाएं पृथ्वी के साथ सद्‌भाव स्थापित करने की दिशा में नेतृत्व करेंगी ,या फिर हमारे पास कोई भविष्य ही नहीं होगा।''

भारत जैसे देश में, जहाँ 'प्रकृति' एवं 'धरती 'को 'माता' की मान्यता दी जाती है, वहाँ यह विचार और भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। किंतु यही विडंबना है कि जिस संस्कृति ने स्त्री और प्रकृति दोनों को पूजनीय माना, उसी समाज में आज दोनों का अस्तित्व संघर्षरत दिखाई देता है।

यह पुस्तक मेरे लिए केवल एक शोध यात्रा नहीं, बल्कि एक भावनात्मक यात्रा रही है, जिसमें शब्दों से अधिक अनुभव और संवेदनाएं रहीं। लेखन के दौरान मुझे अनेक प्रश्नों ने आंदोलित किया जैसे क्या विकास की वर्तमान अवधारणा में भी स्त्री प्रकृति के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध का माध्यम बन सकती है? स्त्री और प्रकृति के इस पारस्परिक सामंजस्यवादी रिश्ते की पृष्ठभूमि क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के क्रम में यह पुस्तक आकार लेती गई। पारिस्थितिकीय नारीवाद के वैश्विक विमर्श को समझते हुए मैंने इसके भारतीय स्वरूप को पहचानने का प्रयास किया। भारत में यह विचार किसी आयातित सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि लोक चेतना और स्त्री अनुभव के रूप में विकसित हुआ है। गाँवों की महिलाएँ जब जंगल बचाने के लिए पेड़ों से लिपटती हैं, जब मेधा पाटकर जैसी स्त्रियां बड़े बाँधों के द्वारा नष्ट की जा रही पारिस्थितिकी एवं विस्थापन के बचाव के लिए आंदोलन करने आगे आती हैं, तब यह विचार अपने सबसे जीवंत रूप में सामने आता है।

समाज और प्रकृति, दोनों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब पर्यावरण का संकट केवल भौतिक न रहकर मानवीय संवेदना का संकट बन गया है, तब यह विचार अनिवार्य हो उठता है कि क्या हमारी सभ्यता ने अपनी जड़ों से दूरी बना ली है। दरअसल इसी प्रश्न ने इस पुस्तक के सृजन को दिशा दी। यह ग्रंथ मूलतः एक शोध–यात्रा से जन्मा है, परंतु इसका उद्देश्य केवल अकादमिक विमर्श तक सीमित नहीं है। मैंने इसे उन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए लिखा है जो हमारे समय की नैतिकता, संवेदना और अस्तित्व को चुनौती देते हैं। इसमें न केवल सैद्धांतिक विवेचन है, बल्कि उन भारतीय स्त्रियों का भी उल्लेख है, जिन्होंने पर्यावरणीय आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाई और अपनी आस्था, श्रम तथा साहस से प्रकृति की रक्षा की एक नई गाथा लिखी। अमृता देवी विश्नोई, गौरा

देवी, वंदना शिवा, मेधा पाटकर आदि उन महिलाओं में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं। इस पुस्तक में मैंने पारिस्थितिकी नारीवाद के वैश्विक विकास, उसके आध्यात्मिक, पारिस्थितिक और नारीवादी आयामों का विश्लेषण किया है। भारत में इसके विकास को हड़प्पा और वैदिक सभ्यता से लेकर आधुनिक युग तक की परंपराओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है, जहाँ स्त्रियां प्रकृति संरक्षण की संवाहक रही हैं। साथ ही विश्व की प्राचीन संरचनाओं और परंपराओं के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे कालांतर में प्रकृति और शक्ति (स्त्री) दोनों शोषण की वस्तु बन गईं और फलस्वरूप पारिस्थितिकीय नारीवाद जैसी अवधारणा का उद्भव हुआ।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों को पारिस्थितिकीय नारीवाद विषय पर केवल व्यापक जानकारी ही नहीं देगी, बल्कि यह सोचने पर भी विवश करेगी कि पर्यावरण और स्त्री दोनों की मुक्ति का प्रश्न एक–दूसरे से गहराई से जुड़ा हुआ है। यदि हम अपने अस्तित्व की निरंतरता चाहते हैं, तो हमें प्रकृति और नारी दोनों के प्रति अपने दृष्टिकोण में करुणा, सम्मान और सहयोग की नई चेतना विकसित करनी होगी।

यह पुस्तक मेरे लेखन की मूल प्रेरणा रहीं मेरी मां को समर्पित है। उनका स्नेह, उनकी संवेदनशीलता और प्रकृति के साथ उनका आत्मीय संबंध हर पृष्ठ पर मेरे साथ जीवित है। उनकी जीवनदृष्टि ने मुझे सोचने, महसूस करने और लिखने की प्रेरणा दी।

मैं अपनी मार्गदर्शक प्रो० मनुका खन्ना, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। निरंतर मार्गदर्शन, प्रेरणा तथा विषय सम्बन्धी समझ के लिए मैं अपने परम पूज्य गुरुदेव प्रो० आर० के० मिश्र (पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), प्रो० बृजेंद्र पाण्डेय (भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला), प्रो. ओ.पी.वी. शुक्ला (विभागाध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग बी.बी.ए. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, (लखनऊ) तथा अग्रज प्रो. शान्तेष कुमार सिंह (SIS-CIPOD, JNU) का आजीवन ऋणी रहूंगा।

अपने कार्यस्थल के वरिष्ठ सहयोगी एवं मार्गदर्शक परम आदरणीय प्रो० राजेश चंद्र पांडेय तथा अग्रज तुल्य डॉ० अतुल प्रकाश बुधौलिया के प्रति मैं कृतज्ञतापूर्ण आभार व्यक्त करता हूँ।

साथ ही, विद्यार्थी जीवन के अभिन्न मित्र डॉ० अनुज कुमार मिश्र (सह आचार्य), डॉ. सरस कपूर (उपकुलसचिव), डॉ० शशिकांत (सहायक आचार्य) एवं कुलवीर सिंह चौहान (एनसीईआरटी, भोपाल) तथा कार्यस्थल के सहयोगी एवं प्रिय मित्र डॉ० गौरव यादव और डॉ० श्रवण त्रिपाठी के प्रति भी मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मेरे प्रिय शिष्य सत्येंद्र गुप्ता (शोधार्थी) और काजल मिश्रा (शोधार्थी) के बिना पुस्तक एडिटिंग एवं वर्तनी सुधार संभव न हो पाता। पुस्तक सामग्री संयोजन में आप दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए मैं हमेशा शुक्रगुजार रहूंगा।

इस यात्रा में मेरे माता–पिता का स्नेह, संस्कार और आशीर्वाद मेरी सबसे बड़ी पूँजी रहे हैं। अपनी जीवनसंगिनी संध्या तिवारी के प्रति मैं गहरा आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हर कठिन क्षण में न केवल साथ दिया बल्कि मेरे विश्वास को संभाला और इस लेखन को संभव बनाया। और मेरी प्यारी बेटियाँ वाची और नव्या, जिनकी मुस्कान हर थकान को मिटा देती है। यह पुस्तक उतनी ही मेरी है जितनी उनकी ।

अंततः इस पुस्तक के लिए मैं उन सभी साहसी महिलाओं के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनके संघर्षों और संवेदनाओं ने इस अध्ययन को जीवन प्रदान किया। यदि यह पुस्तक प्रकृति के संरक्षण को लेकर उनके जैसी संवेदनशीलता का अंश भी उत्पन्न कर सके, तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगा। मेरा प्रयास रहा है कि यह पुस्तक केवल अकादमिक शोध का संकलन न रह जाए, बल्कि संवेदना और चिंतन का एक ऐसा दस्तावेज़ बने जो पाठक के भीतर प्रश्न जगाए और सोच को दिशा दे। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के माध्यम से पाठक न केवल पारिस्थितिकीय नारीवाद को एक विचार के रूप में समझ पाएंगे, बल्कि उसे एक जीवन–दृष्टि के रूप में भी महसूस करेंगे; एक ऐसी दृष्टि जो हमें यह याद दिलाती है कि प्रकृति और स्त्री के बिना मानव सभ्यता अधूरी है। पुस्तक प्रकाशन के लिए शिक्षक साथी डॉ. तरुण श्रीवास्तव, अखंड पब्लिकेशन, दिल्ली और राजू प्रसाद जी को मैं धन्यवाद देता हूं।

डॉ. नमो नारायण

विषयानुक्रमणिका

	आमुख	7
	भूमिका	9
1.	प्रस्तावना	15
2.	पारिस्थितिकीय नारीवाद : सैद्धान्तिक विवेचन	26
3.	भारत में पारिस्थितिकीय नारीवाद का विकास	47
4.	पारिस्थितिकीय नारीवादः संस्थात्मक और आंदोलनात्मक परिप्रेक्ष्य में	76
5.	पारिस्थितिकीय नारीवाद : सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष	141
6.	पारिस्थितिकीय नारीवाद की समालोचना	157
	निष्कर्ष	168
	शब्दावली	179
	संदर्भ सूची	189

नमूना • SAMPLE